मानव–जीवन को सार्थक बनानेवाली सिर्फ माँ है –

प्रोफेसर अच्युत सामंत

हिन्दी हमारी माँ है। यह कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक फैले विशाल भारत की किसी न किसी रूप में मातृभाषा, प्रांतीय भाषा, राजभाषा और सबसे प्रभावशाली लोक–सम्पर्क की आत्मीय भाषा है। भारत में लगभग 300 बोली जाने वाली भाषा एक–दूसरे की पूरक हैं। फिर भी भारतीय संघ की राजभाषा हिन्दी ही है। मेरा यह भी मानना है कि समस्त भारतवासियों को अपनी माँ, अपनी जन्मभूमि और अपनी मातृभाषा का समादर अवश्य करना चाहिए। अधिक से अधिक भाषाओं को जानना चाहिए। मैं हूँ तो ओड़िया लेकिन ओडिया के साथ–साथ बंगाली और हिन्दी भी बोलता हूँ। अंग्रेजी के साथ–साथ अन्य विदेशी भाषाएँ भी मुझे बहुत पसंद हैं। इसलिए मेरा आपसे यह निवेदन है कि आप अधिक से अधिक भाषाएँ अवश्य सीखें और सभी भाषाओं का सम्मान करें।

मेरे व्यक्तिगत जीवन में 2 अगस्त, 2016 को सदा–सदा के लिए अंधेरा छा गया, जब मेरी 89 वर्षीया माँ मुझे अकेला छोड़कर स्वर्ग सिधर गई। मुझे इस बात का दुःख नहीं है कि उनका निध्न हो गया। यह तो शाश्वत सत्य है कि जो इस मृत्युलोक में आया है, वह निश्चित रूप से एक न एक दिन जाएगा भी अवश्य। सच कहता हूँ कि मैंने जिस घोर गरीबी में पलकर अपनी बेसहारा माँ का आँचल पकड़कर बचपन से सीधे बुढ़ापे में प्रवेश किया, वह मेरे लिए और मेरे सभी भाई–बहनों के लिए मात्रा दुःख की कहानी ही रही। मैं अविवाहित हूँ। मेरी माँ ने मुझसे यह कहा था कि बेटा तुम अपने सामर्थ्य से अध्कि से अध्कि लोगों का सहारा बनना। किसी के पेट पर कभी लात मत मारना। उसी की प्रेरणा से आज मेरे द्वारा स्थापित कीट–कीस दोनों ही संस्थाएँ विश्वविख्यात संस्थाएं बन चुकी हैं। विश्वपंचायत यू.एन. द्वारा कीस को मान्यता मिल चुकी है। कीस आज यूएन से जुड़ चुका है। वहीं कीट विश्वविद्यालय भारत सरकार के मानव संसाध्न विकास मंत्राालय की ओर से 'ए ग्रेड' विश्वविद्यालय के रूप में प्रतिष्ति हो चुका है।

मेरा गांव कलराबंक जो कटक जिले में पड़ता है, वह भारत का एक मॉडल वीलेज बन चुका है। मेरे गांव की पंचायत भी मॉडल पंचायत बन चुकी है। जिस गाँव की भूमि पर मेरी माँ का पसीना बहा, जहाँ मेरा कठोर बचपन बीता, मैं चाहता हूँ कि वह गाँव भारत के एक आदर्श गाँव के रूप में जाना जाये, यही हमारे परिवार की स्व. माताजी को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

मेरी माँ ममता की देवी थी। करुणा की प्रकाश स्तम्भ थी। त्याग की आदर्श नारी थी, जिसके पति का निधन मात्र 40 साल की उम्र में ही हो गया। माँ के पास कुछ भी नहीं था। न अपना घर और न ही अपनी कोई जमीन–जायदाद ही। गांव में घर–घर जाकर चौका–बर्तन करती। दूसरे के खेतों में सब्जी उगाती। पेड़ों से गिरने वाले सूखे पत्तों को बटोरकर गन्ने से गुड़ बनाती और किसी प्रकार से अपने गरीब परिवार का भरण पोषण करती। एक बात मेरी माँ में अवश्य थी। वह बहुत ही स्वाभिमानी थी। उनका अपने बच्चों पर कठोर अनुशासन था। गरीबी में जीना अगर कोई किसी से सीखे तो मेरी माँ से सीखे, जिसके पास केवल एक ही फटी–चीटी साड़ी थी, जिसे वह धोकर सुखाकर पहनती थी। वह दयामयी थी। स्नेहमयी थी। वात्सल्यमयी थी। पूजा–पाठ से उसका बहुत लगाव था। वह एक साधारण महिला थी, लेकिन उसके विचार बहुत उच्च थे। वह जब तक जीवित रही, मुझे निःस्वार्थ समाजसेवा के मार्ग पर सतत आगे बढ़ने का आशीष दी। वह जब तक जीवित रहीं, बिना उसके चरण स्पर्श किये मैं ओडिशा से बाहर कभी नहीं गया।

मेरी माँ ने मुझे सत्य के मार्ग पर चलना सिखाया। वह हमेशा कहा करती थी कि बेटा तुम अपने जीवन में सदा सत्य का सहारा लेना। एक चरित्रवान व आदर्श समाजसेवी बनना। अपने से बड़ों का आदर करना। अपनी सोच को आजीवन सकारात्मक बनाये रखना। वह यह भी कहती थी कि जब हमारी सोच सकारात्मक होती है तो हम सदा अपनी कमजोरियों और बुराइयों को ही देखते हैं और उन्हें दूर करने का सतत प्रयास करते हैं लेकिन जब हमारी सोच नकारात्मक हो जाती है तो हमारे लिए पूरा समाज, पूरा देश, यहाँ तक कि पूरी विश्व मानवता में केवल दोष ही दोष दिखाई देने लगता है और हम अपना विकास छोड़कर ईर्ष्या, मनमुटाव, विद्वेष, अहंकार, दूसरे की शिकायत एवं दूसरे के विकास आदि से दुःखी रहने लगते हैं। ऐसे में यह मेरी माँ की मेरे लिए व्यक्तिगत देन है कि मैं बिल्कुल सरल, सहज, मृदुभाषी और सदा दूसरों में केवल अच्छाई ही देखने वाला इंसान बन चुका हूँ। मेरी सोच सदा सकारात्मक है। सच मानिए, मेरे व्यक्तिगत जीवन की सभी असाधारण सफलता के पीछे मेरी माँ का हाथ रहा।

मेरा यह मानना है कि हम सबको माँ का आदर एवं सम्मान करना चाहिए। उसकी नित्य सेवा करनी चाहिए और उसका आशीष पाकर निःस्वार्थ समाजसेवा के पथ पर सदा आगे बढ़ना चाहिए। मैं समझता हूँ कि अगर मेरे लेख से आप सब माँ की सच्ची भक्ति एवं सेवा के महत्व को समझ गए तो मेरा विदेह जीवन निश्चित रूप से धन्य हो जायेगा।

पहली जनवरी,2014 का दिन मेरे जीवन का एक यादगार दिन रहा। 31दिसंबर,2013 को केन्द्रीय विद्यालय नं.6,पोखरीपुट,भुवनेश्वर से जब मैं प्राचार्य के पद से सेवानिवृत्त हुआ तो मेरे आलोक पुरुष कीट–कीस के प्रतिष्ठाता प्रो अच्युत सामंत ने मुझे बुलाकर यह कहा कि आप ब्राह्मण हैं। आप मेरे साथ रहिये और मुझे कुछ–कुछ हिन्दी बोलना सिखाइए।

बताइए और आराम से रहिए। मुझे ऐसा लगा कि यह अहैतुक कृपा भगवान जगन्नाथ ने प्रो अच्युत सामंत को मेरे कल्याणार्थ निमित्त बनाकर उनकी दिव्य वाणी से कहला दिया हो। मैंने पूरे आत्मविश्वास के साथ अपने बुढ़ापे के कल्याणार्थ प्रो अच्युत सामंतजी की बात मान ली। तब से लेकर प्रतिदिन मेरी दिनचर्या सुबह 7.30 बजे से लेकर लगभग 10.00 बजे तक साल के 365दिन उन्हीं के निवासस्थल पर उनके साहचर्य में सुचारु रुप से चलती है। प्रो अच्युत सामंत की कुछ बातें मुझे अत्यंत दिव्य लगीं। पहली बात तो यह कि उनकी आत्मीयताभरी बातों में मुझे ऐसा लगा कि कोई दिव्य आकर्षण है। दूसरी बात यह कि उनके चेहरे पर सदा मुसकराहट रहती है जिसने बुढ़ापे में मुस्कराना मुझे बताया। तीसरी बात उनकी जिज्ञासा हिन्दी बोलने के प्रति। उनके हिन्दी बोलने में कोई झिझक नहीं थी। चौथी बात उनका अविवाहित और निःस्वार्थ समाजसेवा हेतु त्यागमय जीवन अनुकरणीय और वंदनीय लगा। मैंने अपनी कुल 32साल की केन्द्रीय विद्यालय संगठन की सेवाओं से तथा एक हिन्दी बुद्धिजीवी होने के नाते यह महसूस किया कि कीट–कीस के प्राणप्रतिष्ठा प्रो अच्युत सामंत का पूरा जीवन आध्यात्मिक जीवन है। प्रतिदिन उनके द्वारा स्वयं तीन–तीन घण्टे पूजा–पाठ करना जबकि उनके निवासस्थल पर नियमित पूजक हैं जो घर में लगभग एक घण्टे पूजा–पाठ करते हैं। प्रो अच्युत सामंत से मिलनेवालों में साधु–महात्माओं की संख्या मुझे अधिक नजर आती है जो उनको आशीर्वाद देने के लिए भारत के विभिन्न मंदिरों,मठों तथा विदेशों से आते हैं ।स्वयं प्रो अच्युत सामंत का प्रतिमाह पहली तारीख को श्रीजगन्नाथ धाम पुरी जाकर भगवान जगन्नाथ के चरणों में अपना प्रणाम निवेदित करना,सिरुली हनुमान मंदिर में प्रतिमाह अंतिम शनिवार को जाकर पवनपुत्र हनुमानजी की पूजा करना,अपने गांव स्मार्ट विजेल कलराबंक जाकर प्रत्येक माह के शनिवार को अपने द्वारा निर्मित रामदरबार में पूजा करना तथा अपने भुवनेश्वर नयापली स्थित किराये के मकान में प्रत्येक महीने की संक्रांति के दिन श्रीरामचरितमानस का सामूहिक संगीतमय सुंदरकाण्ड पाठ अनुष्ठित कराना मुझे बहुत अच्छा लगता है। मुझे ऐसा

लगा कि प्रो अच्युत सामंत का सानिध्य मुझे दैव संयोग से मुझे प्राप्त हो गया है। इसीलिए आज अपना सबकुछ छोड़कर उनके साथ रहता हूं। उनके सरल,सौम्य और आत्मीय व्यक्तित्व में एक अलग तरह की दिव्यता का अहसास मैंने किया। जब भी उनके द्वारा स्थापित कीट–कीस प्रांगण में उनके बुलाने पर जाता हूं तो मुझे ऐसा लगाता है कि कीट –कीस का पूरा परिवेश आध्यात्मय हो जहां जाकर एक अलौकिक अनुभूति मुझे होती है। मैं उनकी तस्वीर को अपने मोबाइल में सदा रखता हूं जिससे प्रतिपल उनकी हंसती हुई तस्वीर देख सकूं और अपने आपको भी हंसमुख बना सकूं। पिछले लगभग 18सालों से प्रो अच्युत सामंत की तस्वीर मैं नियमित रखता हूं। प्रो अच्युत सामंत जब अपने समाजसेवा के कार्य के लिए ओडिशा से बाहर जाते हैं तो मैं सुबह ठीक 7.30 बजे उनको फोन करता हूं और जैसे ही वे फोन उठाते हैं उनको मैं यहीं आशीर्वाद करता हूं कि ''जय जगन्नाथ! जय जगन्नाथ!! जगन्नाथ!!! प्रातःस्मरणीय–वंदनीय दिव्य पुरुष की सदा जय हो!''उनका हसंता हुआ जवाब आता है कि 'पाण्डेयजी,प्रणाम,नमस्त! आप कैसे हैं?आपने जाय पीया या नहीं? मुझे ऐसा अहसास होता है जैसे मुझे दुनिया की तमाम खुशियां मिल गई हों। सच कहू तो प्रो अच्युत सामंत के विचार,व्यवहार और आचरण में एक अलौकिक दिव्यता है जिसका मैं कायल हूं। उनके साथ मुझे श्रीजगन्नाथपुरी के गोवर्द्धन मठ के 145वें पीठाधीश्वर और पुरी के जगतगुरु परमपाद स्वामी निश्चलानन्दजी सरस्वती महाराज के पावन दर्शन का भी सौभाग्य मिला है। मुझे ऐसा लगाता है कि एक तरफ जहां जगतगुरु शंकराचार्यजी स्वयं साक्षात चन्दमौलीश्वर के रुप में प्रो अच्युत सामंतजी को आशीष प्रदान कर रहे हैं वहीं प्रो अच्युत सामंत जी का जगतगुरु को षष्टांग प्रणाम निवेदन करना भी उनकी दिव्यता को स्पष्ट कर देता है। मैं जब भी प्रो अच्युत सामंत के पैतृक गांव कलाराबंक जाता हूं और प्रो अच्युत सामंत द्वारा उस गांव को स्मार्ट गांव के रुप में अवलनोकन करता हूं तो ऐसा लगता –''सदा दिवाली संत घर''वाली बात प्रो अच्युत सामंत पर पूरी तरह से लागू है। उनके गुरु संत बाबा रामनारायण दास जी महाराज भी उनको दिव्यता का आशीष प्रदान करते

हैं। प्रो अच्युत सामंत ने अबतक कुल लगभग 25 हिन्दू देवालयों का निर्माण अपनी ओर से कराया है जिसमें उनके गांव का रामदरबार,कीस वाणीक्षेत्र का जगन्नाथ मंदिर,पटिया के शिरीडी साईंबाबा मंदिर और सिरुली हनुमान मंदिर का जीर्णोद्धार मुख्य है। प्रो अच्युत सामंत को भगवान जगन्नाथ और पवनपुत्र हनुमान से खास लगाव है जबकि वे सभी धर्मों का आदर करते हैं तथा सभी देवी–देवताओं में विश्वास रखते हैं। सच कहूं तो प्रो अच्युत सामंत ईश्वरभक्त हैं,गुरुभक्त हैं,ब्राह्मणभक्त हैं तथा पूरी तरह से आध्यात्मिक जीवन यापन करते हुए समाज के सबसे उपेक्षित और वंचित आदिवासी समुदाय के अनाथ और बेसहारा बच्चों के वास्तविक रुप में भाग्यविधाता हैं। इसीलिए उनकी दिव्यता को मैं नमन करता हूं और उन्हें आलोक पुरुष तथा दिव्य पुरुष प्रो अच्युत सामंत के रुप में स्वीकार करता हूं। उनकी सकारात्मक सोच को मैं सदा अपने दिल से लगाये रखता हूं और अपनी भी सोच को उनके जैसा बनाने का भरपूर कोशिश करता हूं। उनके जीवन दर्शन : आर्ट आफ गिविंग' को अक्षरशः अपनाता हूं तथा उनके कीट–कीस के दिव्य प्रबंधन को विश्व की अनोखी पहल भी स्वीकार करता हूं । प्रो अच्युत सामंत की यह व्यक्तिगत सोच कि हमसब को दूसरों की अच्छाइयों को देखना चाहिए ;वह दिव्य विचार बहुत पसंद है। सच कहूं तो मैं कोई साहित्यकार अथवा विद्वान नहीं हूं। मैं कोई पत्रकार अथवा लेखक नहीं हूं । प्रो अच्युत सामंत का सानिध्य ही है जो मुझे सबकुछ बना दिया है। इसीलिए अंत में एकबार पुनः उच्चरित करना चाहूंगा कि –''प्रातः स्मरणीय –वंदनीय आलोक व दिव्य पुरुष की सदा जय हो!''